आभार–सुमन

भारतीय चित्रकला के व्यापक परिप्रेक्ष्य में जैन चित्रकला एवं श्रमण परम्परा में जिनवाणी की महत्वपूर्ण स्थान है। रत्नत्रय–आराधना का मूल आधार श्रुतदेवता की आराधना करना है दर्शन ज्ञान आत्मा के अभिन्न गुण है ज्ञान की आराधना का एक आधार शब्द–शिक्षा भी है शब्दों की सुरक्षा से अर्थ सुरक्षित होते रहते हैं शब्दों की साज–संवार ने ही पाण्डुलिपि लेखन और संरक्षण को बल दिया है। एक प्रकार की पाण्डुलिपि का लेखन, संरक्षण, संपादन, शोध, अनुवाद आदि श्रुतकार्य जिनवाणी की सेवा के कार्य ही हैं।

एम.ए. (चित्रकला) एम.फिल. (चित्रकला) पाठ्यक्रमों को सम्पन्न कर जब शोध हेतु मेरे मानस में जैन पाण्डुलिपियों को प्रकाश में लाने का विचार बीजाकुरण हुआ तो चित्रकला विभाग के विदूषी अध्यापक–अध्यापिकाओं ने पर्याप्त सम्बल प्रदान किया। सभी शिक्षकों के स्नेहाशीष से मेरा उत्साह द्विगुणित हुआ और इसी सेवा में निरन्तर रत रहने के लिये मैंने "सचित्र जैन पाण्डुलिपियाँ एक कलात्मक अध्ययन सन्दर्भ आदिपुराण" विषय स्वीकृत कर इस ओर प्रवृत्त होने का पथ प्रशस्त किया।

पथ पर अग्रसर रहते हुये मैंने उन पाण्डुलिपि संरक्षण कर्ताओं से सम्पर्क किया इनमें मुख्यतः कस्तूरचंद सुमन पूर्व सदस्य एवं श्री प्रकाशचन्द्र झा – वर्तमान सदस्य आर्ट म्यूजियम, महावीर जी की सहायता से जयपुर स्थित तेरापंथियान दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर में, संग्रहीत जैनाचार्य पुष्पदंत रचित आदिपुराण एवं जैनाचार्यों जिनसेनाचार्य रचित आदिपुराण पाण्डुलिपियों का अवलोकन किया। इस कार्य के लिये श्री परमपूज्य 1008 आचार्य विद्यानन्द जी महाराज, परम–पूज्य एलाचार्य श्री प्रज्ञासागर जी महाराज समतभद्रचन्द्र पापड़ीवाल, श्री विनयकुमार पापड़ीवाल – कमेटी सदस्य, श्री सोम शर्मा – पाण्डुलिपि संरक्षणकर्ता तेरापंथियान दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर एवं श्री कमलचन्द्र सोगाणी – भट्टारक जी की नसिया (नारायण सिंह सर्किल), जयपुर, शहजाद राय शोध संस्थान प्रमुख अमित राय जैन, बड़ौत, प्रो. मीरा शर्मा (संस्कृत विभाग, दयालबाग, एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट), आगरा डॉ. बबिता शर्मा, बैंगलोर आदि का अमूल्य सहयोग

प्राप्त हुआ। इनके मार्गदर्शन और शुभाशीषों के पुंज मेरी निधि है इन साधर्मियों का सहयोग पाकर मेरी प्रसन्नता दिनानुदिन बढ़ती गयी और मैं इनके अनुशीलन में दत्तचित्त हो गयी।

आज इस अनुष्ठान की पूर्ति पर मेरा मन परितोष का अनुभव कर रहा है इस कार्य की सम्पन्नता में जिन संस्थाओं, महानुभावों का प्रत्यक्ष एवं परोक्ष सहयोग मुझे प्राप्त हुआ है, उन सभी के प्रति मेरी हार्दिक कृतज्ञता समर्पित है सर्वप्रथम मैं अपने संस्थान डी.ई.आई. (डीम्ड यूनिवर्सिटी) तथा विभाग के सभी शिक्षकों के प्रति अगाध श्रद्धाभाव समर्पित करती हूँ इसके केन्द्रिय पुस्तकालय की कृपा की मैं आभारी हूँ जिन्होंने समय–समय पर सहयोग प्रदान कर इस कार्य को सफल करने का सहयोग दिया। मैं अपने माता–पिता व बहिन का सहृदय आभार प्रकट करती हूँ जिनके समय–समय पर उत्साहवर्धन से शोध कार्य पूर्ण करने में सहायता प्राप्त हुयी।

अन्त में सभी ज्ञात–अज्ञात महानुभावों की अनुकम्पा के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता निवेदित करते हुये सुधी मनीषियों के कर–कमलों में यह शोध–प्रबन्ध प्रस्तुत है।

सृष्टि जैन